https://www.path-2-happiness.com/hi

सदा रहने वाली प्रयोजना

डॉक्टर मुराद होवमान

जर्मनी राजदूत

इस्लाम सदा रहने वाली परियोजना का वह जीवन है जो न कभी पुराना पडता है, और न उसकी क्षमता समाप्त होती है। जब कुछ लोगों ने इसको प्राचीन काल में देखा हो, तो वही इस्लाम आज भी है और भविष्य काल में रहेगा। समय या स्थान में वह सीमित नही है। वह कोई विचारों की लहर या फ़ैशन नही है कि उसका इंतज़ार संभव हो। आज तक भी यह कहावत रोशनी प्राचीन काल से आयेगी बिल्कुल सही है।

आध्यात्मिकता को सुधारो

जेवरी लांग

अमेरिकन गणित अध्यापक

मेरे जीवन के एक विशेश लम्हे में ईशवर ने मुझ पर अपने उपकारों और दयालुता कि भरमार की। जबकि मैं कष्ट और बाधा से अंतरिक रूप से पीडित था। मेरे भीतर आध्यात्मिकता को सुधारने की पूरी क्षमता थी। किन्तु मैं मुस्लिम बनगया। इस्लाम से पहले मेरे जीवन में प्रेम का कोई मतलब नही था। लेकिन जब मैने ख़ुरआन पढ़ा, तो मेरे अंदर दयालुता की भावना अधिक हो गई। मैं अपने मन में सदा प्रेम कि भावना से प्रभावित होने लगा। इसी कारण ने मुझे इस्लाम की ओर ले आया। वह कारण ईशवर का प्रेम है जिसका मुक़ाब्ला नही किया जा सकता।

जिस किसी ने भी अच्छा कर्म किया, पुरुष हो या स्त्री, शर्त यह है कि वह ईमान पर हो तो हम उसे अवश्य पवित्र जीवन-यापन करायेंगे। ऐसे लोग जो अच्छा कर्म करते रहे उसके बदले में हम उन्हें अवश्य उनका प्रतिदान प्रदान करेंगे। (अल-नहल, 97)

यही वह मार्ग है। इसको पकड़े रहो। इससे अपने आपको भाग्यशाली बनाओ। अपने सांसारिक जीवन को सुख और खुशी से यापन करो। यह न भूलो ईशवर के पास मिलनेवाली चीज़ें मूल्यवान और शाश्वत है। परलोक का सुख ही शाश्वत सुख है। निश्चय हमारे ईशवर प्रभु ने इसका एक ही मार्ग बनाया है। वह संसार और परलोक की प्रसन्नता है। सारे अन्य मार्गों में संसार का नष्ट और परलोक में दण्ड है। ईशवर ने कहा। और जिस किसी ने मेरी स्मृति से मुँह मोडा तो उसका जीवन तंग (संकीर्ण) होगा और क़ियामत के दिन हम उसे अन्धा उठायेंगे। वह कहेगा, ऐ मेरे रब। तूने मुझे अन्धा क्यों उठाया, जबकि मैं आँखोंवाला था। (ता-हा, 124, 125)

ईशवर ने यह भी कहा। वह कहेगा, इसी प्रकार (तू संसार में अन्धा रहा था) तेरे पास मेरी आयतें आयी थी तो तूने उन्हें भुला दिया था। (ता-हा, 126)

तुम इस मार्ग को भूलने या भुलाने का प्रयास करने से भी बचो। यह प्रसन्नता का मार्ग है।

यही वह मार्ग है जो सरल है। मन में ईशवर के एकीकरण के सिद्धांत, शारीरिक अंगों से इस सिद्धांत के प्रकट होने से और सारे नबी और रसूलों पर विश्वास रखने से इस मार्ग का प्रारंभ होता है। परलोक में शाश्वत प्रसन्नता से इसका अंत होता है। दो बातों की, यानी ईशवर के अतिरिक्त किसी और के पूज्य प्रभु न होने और मुहम्मद के ईशवर द्वारा रसूल होनेकि गवाही देने से प्रारंभ होता है। स्वर्ग में ईशवर के दर्शन और रसूलों के साहचर्य होने कि प्रसन्नता पर इसका अंत होता है। अब तुम कहोः मै गवाही देता हूँ कि ईशवर के अतिरिक्त कोई पूज्य प्रभु नही है, और मुहम्मद ईशवर के रसूल हैं। सुखी जीवन यापन करो। भाग्यशाली बनकर मरो। अपनी समाधि से प्रसन्न उठते हुए शाश्वत बाग़ों की ओर चलो। यही वह मार्ग है। अगर तुम इस पर नही चलते हो, तो रसूल का काम केवल खोल-खोल कर वर्णन करना है। ईशवर ने कहा। किन्तु यदि तुम मुँह मोड़ते हो तो जो कुछ दे कर मुझे तुम्हारे ओर भेजा गया था, वह तो मैं तुम्हे पहुँचा ही चुका। मेरा रब तुम्हारे स्थान पर दूसरी किसी क़ौम को लायेगा। और तुम उसका कुछ न बिगाड़ सकोगे। निस्संदेह मेरा रब हर चीज़ की देख-भाल कर रहा है। (हूद, 57)

अल्लाह के अतिरि क्त कोई और पूज्य प्रभु नही है मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं

जब आप अल्लाह को जान लें, उसके वजूद का विश्वास कर लें, तो इस्लाम आप से यह कहेगा कि ईशवर गले की नस से भी अधिक आप से निकट है। इसीलिए आप के और ईशवर के बीच किसी दलाल की आवश्यकता नही है। न किसी जोतिशी कि ज़रूरत है, जिस को आप (महान) स्विकार करलें, फ़िर वह आपकि तौबा खुबूल करे। या किसी ऐसे केन्द्र की अवश्यकता नही है कि केवल उसी के अंदर प्रार्थना पूर्ण होती हो ।

डोनाल्ड रिकवेल

अमेरिकन कवी

https://www.path-2-happiness.com/hi